“मन्नू भंडारी कृत ‘यही सच है’ कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन”

डॉ.गीता संतोष यादव
सहायक प्राध्यापिका
हिन्दी विभाग एस.एम्.आर.के.महिला महाविद्यालय नाशिक

‘यही सच है’ नई कहानी आंदोलन की प्रसिद्ध लेखिका मन्नू भंडारी की सर्वाधिक विख्यात कहानी है। इस कहानी पर बासु भटाचार्य ने “रजनीगंधा” फिल्म की निर्मित की जिसकी काफी सराहना हुई| मन्नू भंडारी ने जितने पैनेपन से “महाभोज” जैसी रचनाओं में अपने समय के राजनीतिक सामाजिक सच को भरा हुआ है उतनी ही गहराई से “आपका बंटी” जैसे उपन्यास और “यही सच है” जैसी कहानियों में शहरी मध्यवर्गीय जीवन के पारिवारिक संबंधों की टूटने को भी उठाया है|

“यही सच है” दीपा नामक लड़की के जीवन की कहानी है जो उसकी डायरी के कुछ पन्नों के रूप में प्रस्तुत की गई है। दीपा अपने माता-पिता के साथ पटना में थी उसे ‘निशीथ’ से प्रेम हुआ |अठारह वर्ष की उम्र में किया गया यह प्रेम उसके जीवन का आधार था,किंतु अंतत: निशिथ ने उसे ठुकरा दिया। इसी दौरान उसके पिता की मृत्यु हो गई और भाई भाभी ने उसकी जिम्मेदारी उठाने से मना कर दिया | दीपा अकेली होकर कानपुर आ गयी और अपने अनुसंधान कार्य में जुट गई यहीं उसकी मुलाकात संजय से हुई और यह परिचय धीरे-धीरे गहरे प्रेम के स्तर तक पहुंचा। वह निशीथ से घृणा करने लगी |इसी बीच एक इंटरव्यू के लिए कलकत्ता से उसे बुलावा आया कुछ कारणों से संजय उसके साथ नहीं जा सका और दीपा को अकेले ही जाना पड़ा | वहीं संयोग से उसकी मुलाकात निशीथ से हुई और उसने इंटरव्यू में दीपा की सफलता के लिए एड़ी चोटी का जोर लगा दिया |दीपा लगातार चाहती रही कि वह संजय के बारे में उसे सबकुछ बता दे किंतु वह चाहकर भी ऐसा नहीं कर पाई क्योंकि निशीथ की उपस्थिति उसे पुन: उस रोमानी प्रेम में डुबाने लगी | वह अपने भीतर ही भीतर खुद से लड़ती रही और अंतटी: निशीथ के पक्ष में झुक गई | रेलगाड़ी से लौटते समय जब निशीथ ने उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया तो उसे लगा कि यह निशीथ का प्रेम प्रस्ताव है। कानपुर पहुंचते ही उसने निशिथ को पत्र लिखा जिसका भाव यह था कि वह निशीथ के साथ ही जीवन जीना चाहती है। चार दिन बाद निशीथ का जवाब आया जिसमें उसने इस संबंध का जिक्र तक नहीं किया। इस रूखी और ठंडी प्रतिक्रिया से दीपा फिर अचानक असुरक्षित सी हो उठी |तभी वहाँ संजय पहुंचा और दीपा भावुक होकर उससे लिपट गयी | तब उसे लगा निशीथ सिर्फ एक भ्रम था,वास्तविक सच संजय है|

‘यही सच है’ कहानी की केंद्रीय संवेदना इसके शीर्षक से कुछ-कुछ स्पष्ट होती है | किंतु लेखिका के अनुसार सच क्या है- इसकी कई व्याख्याओं की संभावना कहानी में छिपी हुई है। दरअसल, कहानी में कई प्रकार के मानसिक द्वंद दिखते हैं और उन्हीं के परिप्रेक्ष्य में तय किया जा सकता है कि ‘यही सच है’ कहानी का सच क्या है?

कहानी के भीतर से जो सच सबके साफ तौर पर उभरता है,वह यह है कि प्रेम चाहे कितना भी गहरा हो,वह विचलनहीन नही होता | यह 'सच' छायावाद की प्रेम दृष्टि के विपरीत है और शहरी मध्यवर्ग की प्रेम दृष्टि के नजदीक है| कहानी में यदि दीपा की कुछ मनस्थितिओं को क्रमिक रूप में देखें तो साफ नजर आता है कि गहरी प्रतिबद्धता भी एक पुराने किंतु गहरे संबंध के सामने कैसे बिखरने लगती है। इन परिस्थितियों से मन्नू भंडारी दिखाना चाहती हैं कोई भी व्यक्ति चाहे वह पुरुष हो या नारी विभिन्न तथा विरोधी मनास्थितियों के घात प्रतिघात से ही अपने भावनात्मक जीवन को जीता है। जो लोग सोचते हैं कि व्यक्ति का प्रेम अटूट और विचलनहीन होता है, वे लोग सच से बहुत दूर हैं |दीपा की कुछ क्रमिक मनोस्थितियां प्रस्तुत हैं जो इस तीखे सच को उभारती हैं -

१) "विश्वास करो संजय,तुम्हारा मेरा प्यार ही सच है, निशीथ का प्यार तो मात्र छल था,भ्रम था, झूठ था|"

२) मैं उसे (निशीथ को)बता दूंगी कि जल्दी ही मैं संजय से विवाह करने वाली हूं, यह भी बता दूंगी कि मैं पिछला सब कुछ भुला चुकी हूं। यह भी बता दूंगी कि मैं उससे घृणा करती हूं और इस जिंदगी में कभी कभी माफ नहीं कर सकती।यह सब सोचने के साथ-साथ, जाने क्यों, मेरे मन में यह बात भी उठ रही है कि तीन साल हो गए, अभी तक निशीथ ने विवाह क्यों नहीं किया? करे ना करे, मुझे क्या ?"

३) "मैं जानती हूं कि जब निशिथ बगल में बैठा हो , उस समय ऐसी इच्छा करना या ऐसी बात सोचना भी कितना अनुचित है|पर मैं क्या करूं? जितनी द्रुतगति से टैक्सी चली जा रही है ,मुझे लगता है उतनी ही दुर्गति से मैं भी बही जा रही हूं, अनुचित, अवांछित दिशाओं की ओर।"

४) "बार-बार मेरा मन करता है कि क्यों नहीं निशिथ मेरा हाथ पकड़ लेता है , क्यों नहीं मेरे कंधे पर हाथ रख देता है। मैं जरा भी बुरा नहीं मानूंगी,जरा भी नहीं| पर वह कुछ भी नहीं करता|"

५) "बड़ी कातर करुणा याचना भरी दृष्टि से मैं उसे देखती हूं, मानो कह रही हूं कि तुम कह क्यों नहीं देते निशिथ कि आज भी तुम मुझसे प्यार करते हो| इतना सब हो जाने के बाद भी शायद मैं तुम्हें प्यार करती हूं, शायद नहीं, सचमुच ही मैं तुम्हें प्यार करती हूं।"

६) "वह गाड़ी के साथ कदम आगे बढ़ाता है और मेरे हाथ पर धीरे से अपना हाथ रख देता है। मेरा रोम-रोम सिहर उठता है|विश्वास करो यदि तुम मेरे हो तो मैं भी तुम्हारी हूं, केवल तुम्हारी, एकमात्र तुम्हारी , यह स्पर्श,यह सुख,यह क्षण ही सत्य है, बाकी सब झूठ है|"

'यही सच है'कहानी में मन्नू भंडारी ने कई प्रश्नों को उठाया है। इनमें से एक प्रश्न यह है कि जीवन की रोमानी भावनाओं और जीवन की सुरक्षा में किसका कितना महत्व है। दीपा को सुरक्षा संजय से मिलती है किंतु प्रेम की जो पुलक उसे निशीथ के प्रति महसूस होती है,वह संजय के साथ नहीं । कहानी के अंत में वह संजय के सामने बिखरने लगती है जिसका अर्थ कई विद्वान यह लेते हैं कि जीवन की सुरक्षाए रोमानियत से ज्यादा बढ़कर है किंतु,कहानी के कुछ वाक्यों को देखें तो ऐसा प्रतीत होता है कि इसमें भावनामूलक प्रेम को वरीयता दी गई है, बशर्ते वहां उपलब्ध हो सकता हो| निम्नांकित दो वाक्यों में प्रेम की दोनों स्थितियों की तुलना दिखाई पड़ती है--

१) “मेरे सामने पटना में गुजारी सुहानी संध्या और चांदनी रातों के वे चित्र उभर आते हैं, जब घंटों समीप बैठे, मौन भाव से एक दूसरे को निहारा करते थे। बिना स्पर्श किए भी जाने कैसी मादकता तन-मन को विभोर करती रहती थी, जाने कैसी तन्मयता में हम डूबे रहते थे….. एक विचित्र सी स्वप्निल दुनिया में|” (निशीथ के साथ प्रेम की स्थिति)

२) “चांदनी रात में, किसी निर्जन स्थान में, पेड़ तले बैठ कर भी मैं अपनी थीसिस की बात करती हूं,या वह अपने ऑफिस के मित्रों के बातें करता है, या हम किसी और विषय पर बात करने लगते हैं…. पर इस सब का यह मतलब तो नहीं कि हम प्रेम नहीं करते|”(संजय के साथ प्रेम की स्थिति)

इन भावों के साथ-साथ कहानी कुछ और भावों को भी छूती हुई चलती है जो मन्नू भंडारी की मनोवैज्ञानिक की सूक्ष्म पकड़ पर आधारित है। उदाहरण के लिए कहानी में एक भाव यह भी नजर आता है कि प्रेम और घृणा जैसे भाव जितने विरोधी प्रतीत होते हैं|ऐसा नहीं हो सकता है कि एक ही व्यक्ति कुछ क्षणों के अंतराल पर घृणा और प्रेम दोनों का पात्र बन जाए। एक अन्य भाव यह भी है कि पुरुष और नारी के मनोविज्ञान में कितना अंतर होता है। तीन वर्षों के अलगाव के बाद सारे गुजारे हुए कुछ क्षणों की स्मृतियां जहां नारी के भावनात्मक जीवन में तूफान ला देती हैं, वहीं पुरुष उनसे तटस्थ और निर्विकार रह जाता है। इस अर्थ में यह नारी और पुरुष की भाव-क्षमताओं के अंतर को उभरने वाली कहानी भी है|

सन्दर्भ :

१) पुस्तक :”यही सच है” :लेखिका :: मन्नू भंडारी :: प्रकाशक –राधाकृष्ण प्रकाशन :: प्रकाशन वर्ष:१९९७

२) हंस (मासिक पत्रिका)::संपादक ::संजय सहाय :; अंक जनवरी -२०२१

३) “आलोचना” (त्रमसिक पत्रिका)::संपादक :: आसुतोष कुमार:: अंक-६३(अक्टूबर-दिसम्बर २०२०)